IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

प्री-स्कूल शिक्षा के ढांचे के भीतर 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताओं की जांच और इसके संभावित प्रभाव का आकलन

सौरभ शुक्ला[1] and डॉ. सचिन कुमार प्रभाकर[2]
अनुसंधान विद्वान, विभाग -शिक्षा[1]
शोध निर्देशक, विभाग -शिक्षा[2]
सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा कार्यक्रम को पुनर्जीवित करना है क्योंकि लगभग 85% बच्चे का संचयी मस्तिष्क प्रसार 6 वर्ष की आयु से पहले होता है। यह पहल सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि वाले समुदायों के लिए विशेष जोर देने के साथ की गई है ताकि प्रत्येक प्रीस्कूलर का बेहतर प्रतिमान विकास सुनिश्चित किया जा सके। यह प्रत्येक बच्चे को जीवन में आगे बढ़ने और भविष्य में बेहतर आउटपुट देने और राष्ट्र के लिए एक उपयोगी नागरिक बनने के लिए अपने कौशल को बढ़ाने की अनुमति देगा। वर्तमान डिजिटल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत ने समुदाय के प्रत्येक सदस्य को अनिवार्य बुनियादी कौशल के साथ पुनर्जीवित करना अनिवार्य बना दिया है। उदाहरण के लिए, बुनियादी वित्तीय लेनदेन, ऑनलाइन नौकरी के आवेदन पत्र, बिजली बिल, शुल्क भुगतान, घर की खरीदारी, और भी बहुत कुछ। महामारी की स्थिति ने समुदाय के बीच उथल-पुथल को संशोधित किया है, जिसने फिर से लोगों के बीच बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता को बढ़ा दिया है। भारत ने पूरे देश में साक्षरता के अधिकतम प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए "शिक्षा का अधिकार अधिनियम" और "सर्व शिक्षा अभियान" जैसी पहलों के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति की है। वर्तमान अभूतपूर्व परिदृश्य के साथ, एनईपी-2020 की प्रमुख विशेषताओं, इसकी भूमिका, निहितार्थ, भविष्य के प्रभाव और इससे जुड़े विभिन्न हितधारकों की भूमिका की पहचान करने के लिए एक प्रेरक व्यवहार स्थापित करने की आवश्यकता है। वर्तमान समीक्षा का उद्देश्य प्रीस्कूलर के विकास के प्रति एनईपी-2020 के अनिवार्य दृष्टिकोण और समुदाय के वंचित समूहों और गैर-साक्षर सदस्यों के लिए इसके महत्व को समझना है।

शब्दकोश: राष्ट्रीय शिक्षा नीति; पूर्वस्कूल शिक्षा; समुदाय; साक्षरता; शिक्षा।

परिचय :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की उत्पत्ति योजनाबद्ध ५+३+३+४ प्रतिमान दृष्टिकोण में निहित है जैसा कि चित्र १ में दर्शाया गया है, जो शिक्षा के आधार खंड और इसकी प्रभावकारिता के लिए प्रीस्कूलर के विकास की अनिवार्य संपत्ति पर प्रकाश डालता है। इसका उद्देश्य समुदाय के प्रत्येक वर्ग से संबंधित सभी नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के चौथे सतत विकास लक्ष्य में महत्वपूर्ण योगदान देना है। टियरनी एट अल ने प्रारंभिक मस्तिष्क विकास के लिए जन्मपूर्व अवधि के महत्व की सूचना दी है, जो प्रारंभिक बचपन की देखभाल के दौरान एक उपयुक्त नियोजित शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, एनईपी ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि जन्मपूर्व चरण में ८५% बच्चे के मस्तिष्क के विकास के लिए ६ साल से पहले बच्चे में आवश्यक कौशल, आदतें और बुनियादी शिष्टाचार विकसित करने के लिए अनिवार्य जागरूकता की आवश्यकता होती है। शिक्षा का मौलिक अधिकार अधिनियम २००९ ने पूरे देश में साक्षरता फैलाने में मदद की। प्रीस्कूल आयु औपचारिक-पूर्व सीखने के चरण से मेल खाती है जो एक बच्चे को शिक्षा प्रणाली को समझने और एक आदर्श शिक्षा प्रणाली प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने के लिए तैयार करती है। साहित्य में बताया गया है कि प्रीस्कूल सीखने का अनुभव रखने वाले छात्रों में बिना किसी प्रारंभिक बचपन शिक्षा कार्यक्रम के अनुभव वाले छात्रों की तुलना में सीखने में बेहतर प्रभावकारिता होती है। NEP 2020 चार बुनियादी प्रमुख सुधार क्षेत्रों पर जोर देता है: शिक्षा के सभी स्तरों में गुणात्मक शिक्षण संशोधन, आधारभूत कौशल बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम संशोधन, वैकल्पिक मूल्यांकन विश्लेषण और योजनाबद्ध प्रतिमान परिवर्तन का पालन करना। जैसा कि चित्र 1 में दिखाया गया है, फाउंडेशन चरण शिक्षा के अनौपचारिक मोड से मेल खाता है, जिसमें पहले 3 वर्षों के दौरान एक बच्चा उचित खेल के तरीके/प्रीस्कूल स्कूल के माध्यम से प्रीस्कूल चरण में प्रवेश करेगा, जिसमें खेल-तरह की गतिविधियाँ शामिल होंगी, बुनियादी शिष्टाचार, टीम वर्क, हावभाव, साझाकरण, सहयोग, स्वच्छता प्रथाओं का पालन किया जाएगा। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी, माता-पिता अपने बच्चों को प्ले-वे, मॉन्टेसरी स्कूल या अन्य प्ले-वे गतिविधि प्रशिक्षण केंद्रों में भेजना पसंद करते हैं, लेकिन यह एक वैकल्पिक मोड है जिसका कोई अधिदेश नहीं है। इसके अलावा, अतीत में, वंचित माता-पिता द्वारा प्रीस्कूल तक पहुँच की कमी और उपयुक्त गुणवत्ता वाले प्रीस्कूल का चयन करना बड़ी चुनौतियाँ थीं। इस नए NEP 2020 फाउंडेशन स्टेज की शुरुआत के साथ, यह गरीब परिवारों के बच्चों को उनके बचपन के कौशल में संशोधन करने के लिए अनुकूल बुनियादी ढाँचा प्रदान करने के लिए एक अनिवार्य विशेषता बन जाएगी। शिक्षा

के अधिकार अधिनियम, 2009 के मामले के समान, फाउंडेशन स्टेज का यह 3 साल समाज के प्रत्येक वर्ग से संबंधित प्रीस्कूलरों को उनके प्रारंभिक चरण में अन्य बच्चों के साथ समान तरीके से प्रतिस्पर्धा करने के लिए अपने कौशल को विकसित करने के लिए सही मंच प्रदान करेगा। फाउंडेशन स्टेज के ग्रेड 1 और ग्रेड 2 में अनौपचारिक प्रतिमान दृष्टिकोण में मज़ेदार और खेल गतिविधियों के माध्यम से बुनियादी गणितीय कौशल, विज्ञान, संख्या गिनती आदि सीखना शामिल है। मूल रूप से, फाउंडेशन स्टेज के इन 2 वर्षों का उद्देश्य एक बच्चे के निर्माण खंडों को स्थापित करना है ताकि वह तैयारी मॉड्यूल में अपने औपचारिक सीखने के चरणों में असहमति जता सके। शिक्षार्थियों को बुनियादी वैज्ञानिक कौशल सिखाने और उनकी बुनियादी गणितीय अवधारणाओं को विकसित करने के लिए प्रशिक्षकों द्वारा तैयारी चरण के दौरान व्यावहारिक गतिविधि प्रदर्शन उपकरण का उपयोग किया जाएगा। सीखना मज़ेदार, दिलचस्प, जानकारीपूर्ण और अभिनव बनाया जाएगा। मध्य चरण में औपचारिक शिक्षा प्रणाली के लिए एक बच्चे को तैयार करने के लिए प्रारंभिक मॉड्यूल में इंटरैक्टिव शिक्षण कौशल वाली हल्की पुस्तकों का पालन किया जाएगा। मध्य चरण तीन साल के उपयुक्त बुनियादी ढांचे और पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम के साथ छात्रों के लिए औपचारिक सीखने और पढ़ाने के चरण से मेल खाता है। यह चरण विषय शिक्षकों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली की तरह विषयवार पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए तैयार करता है। इस मोड में, एक बच्चे को औपचारिक प्रशिक्षण लेने और उन्नत शिक्षण कौशल हासिल करने के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित और योजनाबद्ध किया गया है। एनईपी 2020 की नवीनता प्रयोगात्मक सीखने के माध्यम से छात्रों के ज्ञान कौशल को बढ़ाते हुए प्रत्येक विषय के महत्व को व्यावहारिक कार्यान्वयन से जोड़ना है। हाई स्कूल अनिवार्य पहले दो ग्रेड और वैकल्पिक अंतिम दो ग्रेड के साथ चार साल के कार्यक्रम शामिल करता है

पेपर के उद्देश्य:

वर्तमान समीक्षा का उद्देश्य एनईपी 2020 द्वारा प्रस्तावित एक अभिनव दृष्टिकोण को उजागर करना है, ताकि प्रीस्कूलरों के लिए सीखने के कौशल और प्रशिक्षण पद्धति में वृद्धि पर जोर दिया जा सके, जिससे प्रारंभिक बचपन की देखभाल और विकास संभव हो सके। पेपर में हाइलाइट की गई प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

1. बच्चों में जन्मपूर्व सीखने को बढ़ावा देने के लिए एनईपी 2020 की नीतियों और सिफारिशों की भूमिका।
2. एनईपी 2020 के माध्यम से प्रीस्कूलरों के साथ प्रभावी संचार के लिए आवश्यक आयु-समझ और भाषा-समझ शिक्षण कौशल का संवेदीकरण।

3. प्रारंभिक बचपन शिक्षा कार्यक्रम का मार्गदर्शन, निगरानी और पर्यवेक्षण करने के लिए प्रीस्कूल बुनियादी ढांचे, प्रशिक्षित और योग्य शिक्षकों का महत्व।

4. एनईपी 2020 द्वारा सुझाए गए अनुसार प्रीस्कूलर प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों और अध्ययन सामग्री की भर्ती, शिक्षण पद्धति, प्रदर्शन उपकरण संकलित करना।

कार्यप्रणाली एवं डेटा :

प्रीस्कूल शिक्षा कार्यक्रम और इसके कार्यान्वयन दृष्टिकोणों के संबंध में एनईपी 2020 की व्यवस्थित समीक्षा और मेटा विश्लेषण इसके अपेक्षित प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए किया गया है। डेटा एनईपी 2020 में प्रीस्कूल शिक्षा कार्यक्रम को अनिवार्य प्रोटोकॉल के रूप में पेश करने के सकारात्मक प्रभावों को दर्शाता है, जबकि प्रारंभिक अवस्था में बचपन की शिक्षा के महत्व को समझाने वाले शोधकर्ताओं की रिपोर्ट और अध्ययन का हवाला देते हुए।

संबंधित शोध की समीक्षा :

एनईपी 2020, प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा पर जोर देते हुए स्कूल पाठ्यक्रम की 10 + 2 संरचना को 5 + 3 + 3 + 4 संरचना के साथ प्रतिस्थापित करके, शिक्षा पर चौंतीस साल पुरानी राष्ट्रीय नीति की जगह लेती है। एनईपी 2020 में समाज के प्रत्येक वर्ग से संबंधित बच्चों की जन्मपूर्व उम्र को विकसित करने के लिए एनईपी 2020 में 3-6 वर्ष की आयु के कवर न किए गए समूह को अनिवार्य शिक्षा शिक्षण के रूप में शामिल किया गया है। विशेष रूप से समाज के अविकसित और गरीब वर्ग को इस अभिनव नीति के तहत कवर करने का लक्ष्य रखा गया है। ऐथल एट अल ने उच्च शिक्षा प्रणाली में एनईपी 2020 के उद्देश्यों और कार्यान्वयन के विश्लेषण और चौथे एसडीजी की उपलब्धि पर एक विस्तृत समीक्षा की सूचना दी है। बेल्स्की एट अल ने प्रारंभिक बाल देखभाल से जुड़े विकासात्मक जोखिमों के महत्व पर प्रकाश डाला है एनईपी 2019 के मसौदे की आलोचना की रिपोर्ट की है और नीतिगत अंतराल और दीर्घकालिक शिक्षा पद्धति और प्रत्येक चरण पर प्रभाव के बारे में अस्वीकार्य तथ्यों का विश्लेषण किया है। मारुथवनन एट अल ने मदुरै जिले के माध्यमिक विद्यालय के सरकारी, स्व-वित्तपोषित और सहायता प्राप्त शिक्षकों के बीच एनईपी 2019 के मसौदे के बारे में संवेदनशीलता और जागरूकता पर एक केस स्टडी की रिपोर्ट की है। जनसंख्या, स्थान, लिंग, सेवा के वर्ष, प्रबंधन रणनीतियों और पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर सर्वेक्षण के लिए पच्चीस पैरामीटर चुने गए थे। उन्होंने देखा है कि पुरुष शिक्षकों में महिला शिक्षकों की तुलना में एनईपी 2019 मसौदा नीति के बारे में अधिक

जागरूकता थी। इसी तरह शहरी स्कूल के शिक्षकों और सरकारी स्कूलों में काम करने वाले शिक्षकों ने क्रमशः ग्रामीण और स्व-वित्त शिक्षकों की तुलना में बेहतर जागरूकता की सूचना दी। संयुक्त परिवार से संबंधित शिक्षकों ने एक-दूसरे के साथ बातचीत और विचार साझा करने की अधिक संभावना के कारण एकल परिवारों की तुलना में बेहतर जागरूकता की सूचना दी एनईपी 2020 के अनुसार, सरकारी शिक्षकों की भर्ती के लिए न्यूनतम पात्रता चार वर्षीय बी.एड. डिग्री और शिक्षक पात्रता परीक्षा प्रमाणपत्र होगी। इससे प्रीस्कूल शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावकारिता में संशोधन के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कर्मचारियों की भर्ती की अनुमति मिलेगी। पियांटा एट अल ने प्रीस्कूल शिक्षा के प्रभाव पर सार्वजनिक नीतियों और साक्ष्य आधारित दृष्टिकोणों की भूमिका की रिपोर्ट की। साक्ष्य अध्ययन हेड स्टार्ट, पब्लिक स्कूल और चाइल्ड केयर प्रोग्राम से अनुसंधान और प्रयोगात्मक विधियों का उपयोग करके किए गए थे। प्रीस्कूल कार्यक्रम के छोटे बच्चों के सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास पर प्रयोगात्मक और शोध अध्ययन दोनों पर दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव की रिपोर्ट की गई थी। मामूली साक्ष्यों ने प्रीस्कूलरों के सामाजिक व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव का सुझाव दिया, लेकिन प्रयोगात्मक रूप से पुष्टि नहीं की गई। देवी एट अल और झा एट अल ने एनईपी 2020 पर प्रबंधन और वाणिज्य अनुशासन के हितधारकों की जागरूकता की रिपोर्ट की है और अतीत में प्रचलित सैद्धांतिक अध्ययन दृष्टिकोण की तुलना में वर्तमान एनईपी 2020 नीति में प्रशिक्षण कौशल की व्यावहारिक पद्धति के प्रभुत्व की सराहना की है। उन्होंने परिणाम आधारित शिक्षा के आधार पर प्रबंधन और वाणिज्य के पाठ्यक्रम को प्रतिमान तरीके से फिर से तैयार करने की आवश्यकता के बारे में निष्कर्ष निकाला है। कार्यक्रम की प्रभावकारिता बढ़ाने के लिए किसी विशेष कार्यक्रम की कार्यान्वयन प्रक्रिया से पहले हितधारकों को पूर्व जागरूकता की आवश्यकता होती है। सावंत एट अल ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में स्कूल में 5 साल सीखने के बाद भी 50% बच्चों में बुनियादी संख्यात्मक कौशल की कमी की साक्ष्य आधारित रिपोर्टों के कारण प्राथमिक शिक्षा, संख्यात्मक परिणाम और खराब साक्षरता को एनईपी 2020 के जोर वाले क्षेत्रों के रूप में उचित ठहराया। कौरव एट अल ने एनईपी 2020 के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं की पहचान की है, अर्थात्; छात्र, भाषा और पाठ्यक्रम और एनईपी 2020 के प्रति हितधारकों के सकारात्मक पहलुओं और विचारों की सूचना दी। भारत की एनईपी के तीन अलग-अलग पहलू हैं (i) शिक्षा, अनुसंधान, संस्थान और छात्रों से संबंधित चिंताएं, (ii) नीति, शिक्षण, अखंडता, सक्षमता, नवाचार और ज्ञान को विकसित करने वाले उपाख्यान और (iii) गुणवत्ता, विकास, विश्वविद्यालय, व्यावसायिक, सीखने और बहु-विषयक फोकस। अध्ययन के लिए लिए गए मापदंड थे: बुनियादी सुविधाओं और पुस्तकों का प्रावधान, विकास गतिविधियाँ, प्रीस्कूलर को शिक्षण कौशल दिखाने के लिए कार्यप्रणाली और उपकरण, भवन और कमरों के लिए बुनियादी ढाँचा। आंगनवाड़ी केंद्रों की तुलना में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

बेहतर बुनियादी ढाँचे और अच्छी तरह से सुसज्जित सुविधाओं के कारण प्रीस्कूल के लिए बेहतर परिणाम पाए गए।

चित्र 1: एनपीई-2020 के लिए शिक्षण पद्धति का योजनाबद्ध चित्रण

एनईपी 2020 के प्रति शैक्षणिक संस्थानों और शिक्षकों की भूमिका और इसके निहितार्थ:

एनईपी 2020 का उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्यों और पारंपरिक ज्ञान को विकसित करना है, साथ ही बहुमुखी कम्प्यूटेशनल कौशल, डिजाइन सोच, कोडिंग, डिजिटल साक्षरता, नैतिक तर्क आदि के प्रति प्रोत्साहन देना है। ऐथल एट अल ने भारत की माध्यमिक शिक्षा प्रणाली के विखंडन के प्रमुख कारणों में से एक के रूप में विभिन्न शिष्यों में छात्रों की प्रारंभिक स्ट्रीमिंग की सूचना दी है। इसलिए, एनईपी 2020 द्वारा प्रारंभिक बचपन की शिक्षा

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

पर जोर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में एक तपस्या को दूर करने के इस विचार के पीछे की धारणा को स्पष्ट करता है। इसके अलावा, यह विश्लेषण किया गया है कि 6 से 16 वर्ष के आयु वर्ग के 75% बच्चों की तुलना में उच्च कक्षाओं में स्कूल छोड़ने वालों की संख्या में महत्वपूर्ण संशोधन हुआ है। वित्तीय मुद्दों के अलावा, पारिवारिक स्थिति, जाति और क्षेत्रीय मुद्दों, शैक्षणिक संस्थानों के ग्राहकों द्वारा अभिनव शिक्षण वातावरण की अनुपस्थिति शिक्षा में छात्रों की घटती रुचि की ओर ले जाती है अध्ययन के लिए चुनी गई प्री-स्कूलों की पांच विभिन्न श्रेणियों को चित्र 2 में दर्शाया गया है।

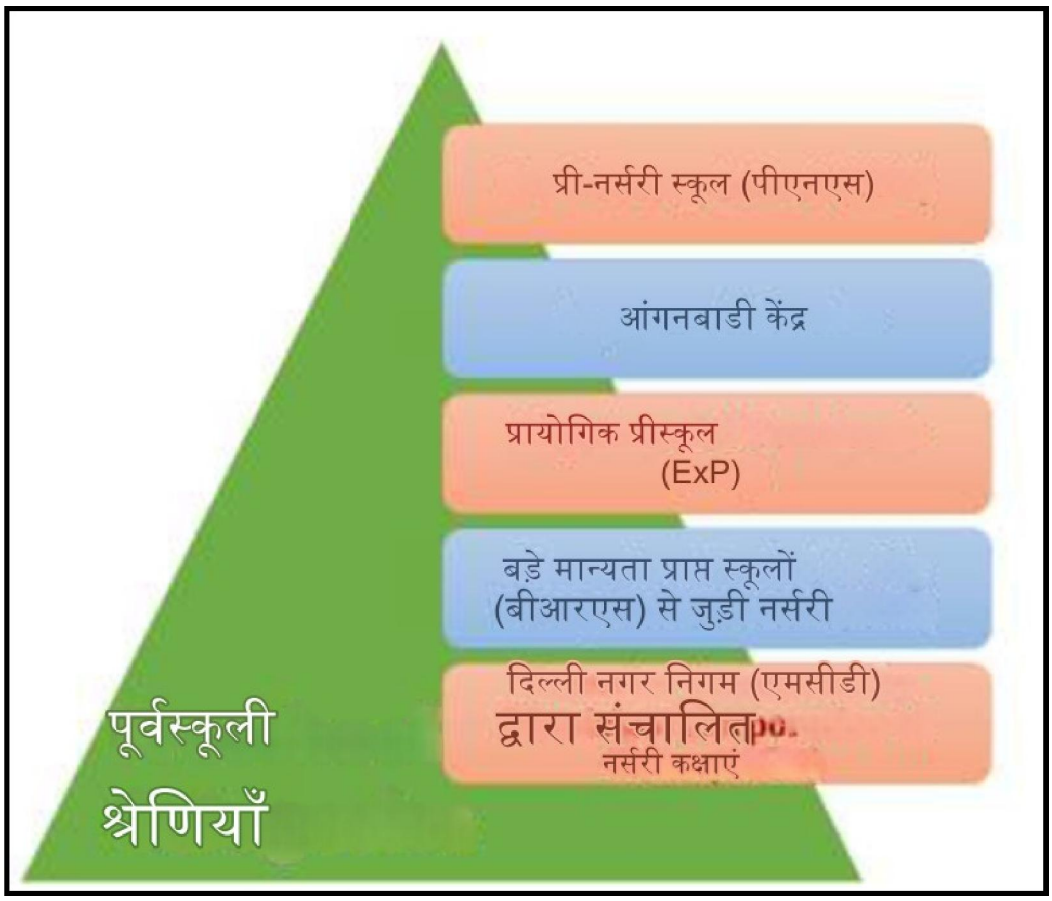

चित्र 2: प्रीस्कूल की विभिन्न श्रेणियाँ

प्री-नर्सरी स्कूल जो निजी तौर पर चलाए जा सकते हैं और उन्हें किसी मान्यता या प्रमाणन की आवश्यकता नहीं होती है, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एकीकृत बाल विकास योजना के अंतर्गत आंगनवाड़ी केंद्र, विभिन्न विश्वविद्यालयों के बाल विकास या शिक्षा विभागों द्वारा प्रयोगात्मक अध्ययन के लिए चलाए जा रहे प्रायोगिक प्रीस्कूल, 'बड़े मान्यता प्राप्त स्कूल से जुड़ी नर्सरी जो मान्यता प्राप्त हैं और जिनके पास नर्सरी से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के नामांकन के लिए अच्छी तरह से स्थापित मॉडल हैं और दिल्ली नगर निगम द्वारा संचालित

स्कूलों की नर्सरी कक्षाओं को अध्ययन के लिए चुना गया था। किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से ईसीसीई प्रशिक्षित शिक्षक किसी शैक्षिक संस्थान की गुणवत्ता निर्धारित करने वाले प्रमुख मापदंडों में से एक थे। बताया गया कि भर्ती किए गए प्रशिक्षकों में से 100% एक्सपी में ईसीसीई प्रशिक्षित शिक्षक थे और बीआरएस में 75% से अधिक थे। सामाजिक विकास, सूक्ष्म और स्थूल मोटर कौशल, रचनात्मक गतिविधियाँ, व्यक्तिगत देखभाल और दिनचर्या, भाषा और तर्क, शारीरिक शिक्षण सहायक सामग्री और बुनियादी ढाँचे का उपयोग प्रीस्कूल की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए किया जा सकता है। चोपड़ा एट अल ने पाठ्यक्रम तैयार करते समय बाल विकास के विकासात्मक दृष्टिकोण और सिद्धांतों का पालन करके ExP द्वारा सर्वोत्तम बुनियादी ढाँचे की रिपोर्ट की थी, जबकि BRS और PNS ने शैक्षणिक दृष्टिकोण का पालन करते हुए प्रणाली में 3 R के सीखने पर ध्यान केंद्रित किया था। प्रीस्कूलर कार्यक्रमों को मान्यता देने और लाइसेंस प्रदान करने वाले नियामक मॉडल की अनिवार्य भूमिका को उचित प्रभाव मूल्यांकन के दौरान अनदेखा नहीं किया जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी विशेष परियोजना के कार्यान्वयन भाग के लिए, एक कठोर पर्यवेक्षण और निगरानी अनिवार्य है। देखभाल, शिक्षा, सहयोग और घर और बाल देखभाल केंद्र से समर्थन की गुणवत्ता के बीच संतुलन भी प्रीस्कूलर के विकास के लिए NEP-2020 के लक्ष्यों और उद्देश्यों के प्रभावी कामकाज और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यिजेंगॉ एट अल ने निजी और सार्वजनिक प्रीस्कूलों के बीच पाठ्यक्रम कार्यान्वयन में भिन्नता की रिपोर्ट की है और कार्यान्वयन तंत्र के लिए योगदान देने वाले कारक के रूप में सरकारी अधिकारियों द्वारा नीतियों, शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के लिए प्रोत्साहन, बुनियादी ढाँचे और पर्यवेक्षण की भूमिका को दर्शाया है। एनईपी-2020 का उद्देश्य प्रत्येक प्रीस्कूल की अनूठी क्षमताओं को पहचानना और बढ़ावा देना है, साथ ही माता-पिता और शिक्षकों को संवेदनशील बनाना है, ताकि प्रत्येक छात्र के शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों चरणों में समग्र विकास को बढ़ावा दिया जा सके। शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका रटने और परीक्षा की तैयारी के बजाय वैचारिक सीखने के लिए मंच तैयार करना है। बच्चों के साथ प्रशिक्षण सत्रों के दौरान उपयोग किए जाने वाले प्रदर्शन और अभ्यास उपकरण बच्चे के प्रीस्कूल चरण और ग्रेड स्तर के अनुसार आयु के अनुकूल होने चाहिए। ECCE कार्यक्रम के शिक्षक और संकाय छात्रों के लिए सीखने का केंद्र होते हैं और उन्हें सकारात्मक कार्य वातावरण, स्वच्छता और सेवा शर्तों के साथ एक विशिष्ट वातावरण प्रदान करना चाहिए। एक शिक्षा कार्यक्रम की स्पष्टता, संसाधन प्रभावकारिता, नवाचार प्रथाओं और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए एक हल्का लेकिन सख्त नियामक मॉड्यूल बनाए रखा जाना चाहिए। इससे प्रीस्कूलरों के लिए अपेक्षित वातावरण बनाए रखने की उचित मर्यादा स्थापित करने की अनुमति मिलती है।

प्रीस्कूलर के विकास में अनुभवात्मक शिक्षा का महत्व:

अनुभवात्मक शिक्षा में विभिन्न विषयों के बीच अंतर-संबंधों की खोज, खेल और कला एकीकृत शिक्षा, कहानी सुनाना और व्यावहारिक शिक्षा, तथा गतिविधि प्रदर्शन प्रतिमान शिक्षाशास्त्र शामिल है। यह न केवल मौज-मस्ती आधारित शिक्षण तंत्र की अनुमति देता है, बल्कि पूर्व-शिक्षार्थियों को पारंपरिक, नैतिक और देशभक्ति का ज्ञान भी प्रदान करता है।

कला और खेल एकीकृत शिक्षा

यह शिक्षा प्रणाली कला और संस्कृति के बहुमुखी पहलुओं का उपयोग करती है जो सीखने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों में भारतीय लोकाचार को आत्मसात करने में भी मदद करती है। ड्राइंग, फैंसी ड्रेस और अन्य कला और शिल्प प्रतियोगिताओं को प्रोत्साहित करने से उन्हें भारतीय त्योहारों, देशभक्ति, भारतीय संस्कृति, भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों और अन्य संस्कृति और नैतिक मूल्यों के महत्व को समझने में मदद मिलती है। इसी तरह, शारीरिक गतिविधियों, उम्र के हिसाब से खेल और एनिमेटेड खेल वीडियो के प्रदर्शन के माध्यम से खेल शिक्षा बच्चों में शारीरिक स्वास्थ्य, सहयोग, साझा करने, टीम वर्क, धैर्य, संघर्ष, हार और जीत को संभालने और अन्य संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास पर जोर देती है।

भाषा की शक्ति और बहुभाषावाद

एनईपी-2020 में एक नवीनता यह है कि कक्षा 5 तक सीखने और शिक्षा के लिए संचार के तरीके के रूप में मातृभाषा को महत्व दिया जाना शुरू किया गया है। मुदजीलवाना एट अल और सराचो एट अल ने प्रीस्कूल में उपयोग की जाने वाली शिक्षा के तरीके के रूप में भाषा के प्रभाव पर एक आकलन किया है। उन्होंने उन चुनौतियों और जोखिमों के बारे में बताया है जिन्हें शिक्षकों को लेने के लिए तैयार रहना चाहिए और विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि से संबंधित बच्चों के समूह को संभालने के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित होना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि नीति अनुशंसा और रिपोर्ट किए गए अध्ययनों के अनुसार बच्चे प्रारंभिक चरणों के दौरान अपनी मातृभाषा के माध्यम से सीखने में अधिक सहज होते हैं, जिसमें उन्हें उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए बेहतर तैयारी करने के लिए प्रभावकारिता के साथ अपने ज्ञान कौशल को विकसित करने की आवश्यकता होती है। इस चुनौती से पार पाने के लिए, भारत के विभिन्न राज्यों के बीच विभिन्न भाषा कौशल वाले शिक्षकों को बड़ी संख्या में नियुक्त करने के लिए द्विपक्षीय समझौते की सिफारिश की गई है। इसके अलावा, विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को सीखने और सिखाने के लिए प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग की भी सिफारिश की गई है। मूल रूप

से एनईपी 2020 बच्चों के प्रशिक्षण अध्यापन के हिस्से के रूप में भाषा सीखने को भी बढ़ावा देता है। इसलिए, बच्चों की सीखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए उन्हें मित्रवत भाषा और अन्य भाषाई भाषाओं के माध्यम से अधिक प्रवृत्त होने की अपेक्षा की जाती है, जिससे उन्हें चीजों को जल्दी समझने और समुदाय के सभी क्षेत्रों में उनके संचार कौशल को बढ़ाने में मदद मिलेगी। इससे बच्चों के सामाजिक कौशल के विकास और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में भी मदद मिलेगी। हालाँकि, कार्यान्वयन प्रक्रिया के लिए, द्विभाषी भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकों और शिक्षार्थी की मित्रवत भाषा में अन्य शिक्षण अध्ययन सामग्री को संकलित करने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता होगी। संवैधानिक प्रावधानों, विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों, समुदायों से संबंधित लोगों की आकांक्षाओं और पूर्वस्कूली शिक्षार्थी की लचीलेपन के अनुसार विचार करते हुए त्रि-भाषा सूत्र को लागू करना जारी रखा जाएगा। कक्षा 6-8 में भाषा विकास योजना कार्यक्रम के तहत बच्चों के लिए एक मनोरंजक सह शिक्षण परियोजना के रूप में "एक भारत श्रेष्ठ भारत" पहल भी प्रस्तावित है। इस परियोजना का उद्देश्य बच्चों को विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, आदिवासी संरचनाओं और संचार के लिए उनके द्वारा बोली जाने वाली और उपयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं के बारे में सिखाना है।

प्रीस्कूलर में बुनियादी कौशल, आदतों और व्यक्तिगत स्वच्छता की स्थिति का विकास:

प्रीस्कूल शिक्षा प्रणाली को 5+3+3+4 संरचना में शामिल करने का मुख्य आकर्षण बच्चों में बुनियादी कौशल का विकास है, जो भविष्य में उन्हें बेहतर नागरिक बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये प्राथमिक बुनियादी कौशल बच्चे के बुनियादी कौशल में जमीनी स्तर पर विकास को बढ़ावा देते हैं, जो उसे समाज में आगे बढ़ने के लिए उपयुक्त कौशल के साथ एक जिम्मेदार व्यक्ति बनाता है। प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रमों में, कैदियों के साथ बातचीत, दोस्ती और सामाजिक संबंधों के लिए मौखिक भाषा विकास पर अधिक जोर दिया जाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

चित्र 3: प्रीस्कूलर को बुनियादी और स्वच्छता कौशल सिखाने के विभिन्न तरीके

व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रमुख कारकों में से एक के रूप में हाथ धोना न केवल प्रीस्कूलर बल्कि सभी व्यक्तियों के लिए इस वर्तमान महामारी परिदृश्य में बनाए रखने के लिए अनिवार्य आदत बन गई है। ए.एल. बश्तावी एट अल ने कई संचारी और महामारी रोगों से निपटने के लिए सामुदायिक रणनीतियों को संशोधित करने के सर्वोत्तम उपकरण के रूप में प्रीस्कूलरों को व्यक्तिगत स्वच्छता प्रथाओं को सिखाने पर प्रकाश डाला है। वर्तमान महामारी परिदृश्य में कम उम्र में बच्चों को ये कौशल सिखाना एक अनिवार्य अभ्यास है। ओबेंग एट अल ने 58 प्रीस्कूलों के पायलट अध्ययन की सूचना दी है जिसमें 112 प्रीस्कूल शिक्षकों को हितधारक के रूप में शामिल किया गया है और पाया गया है कि 32% शिक्षकों ने बच्चों को हाथ धोने की प्रथा सिखाने को प्राथमिकता दी है। कीटाणुओं पर चर्चा, खांसने और छींकने के दौरान मुंह को ढकना, ग्लिटर, उचित दंत देखभाल और

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

समय-समय पर वॉशरूम के उचित उपयोग चमक-दमक, पोस्टर कलर, वाटर कलर, गम, पेपर फोल्डिंग कलर्ड पेपर और प्ले वे एक्टिविटीज के दौरान इस्तेमाल किए जाने वाले अन्य ओरिगेमी उत्पाद अगर ठीक से न धोए जाएं तो दूसरे बच्चों में संक्रमण का कारण बन सकते हैं। मौजूदा महामारी परिदृश्य में, शिक्षकों को प्रीस्कूल शिक्षण के दौरान उचित साफ-सफाई बनाए रखने, खेल गतिविधियों के दौरान बच्चों के बीच मार्गदर्शन, पर्यवेक्षण और निगरानी करने के लिए सभी आवश्यक मॉड्यूल और प्रोटोकॉल से अच्छी तरह प्रशिक्षित और सुसज्जित होना चाहिए। इसलिए, मौजूदा महामारी परिदृश्य के अनुसार बच्चों की शुरुआती उम्र में एनईपी 2020 की शुरुआत एक महत्वपूर्ण कार्य बन जाता है जिसका पालन किया जाना चाहिए। उचित शिक्षकों की भर्ती की जानी चाहिए और उन्हें समय-समय पर अच्छी तरह प्रशिक्षित और निगरानी की जानी चाहिए। केरिच एट अल ने प्रीस्कूलरों के बीच स्वच्छ प्रथाओं और अन्य बुनियादी कौशल को सुविधाजनक बनाने के लिए शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न शिक्षण विधियों की व्याख्या की है। उन्हें चित्र 3 में चित्रित किया गया है।

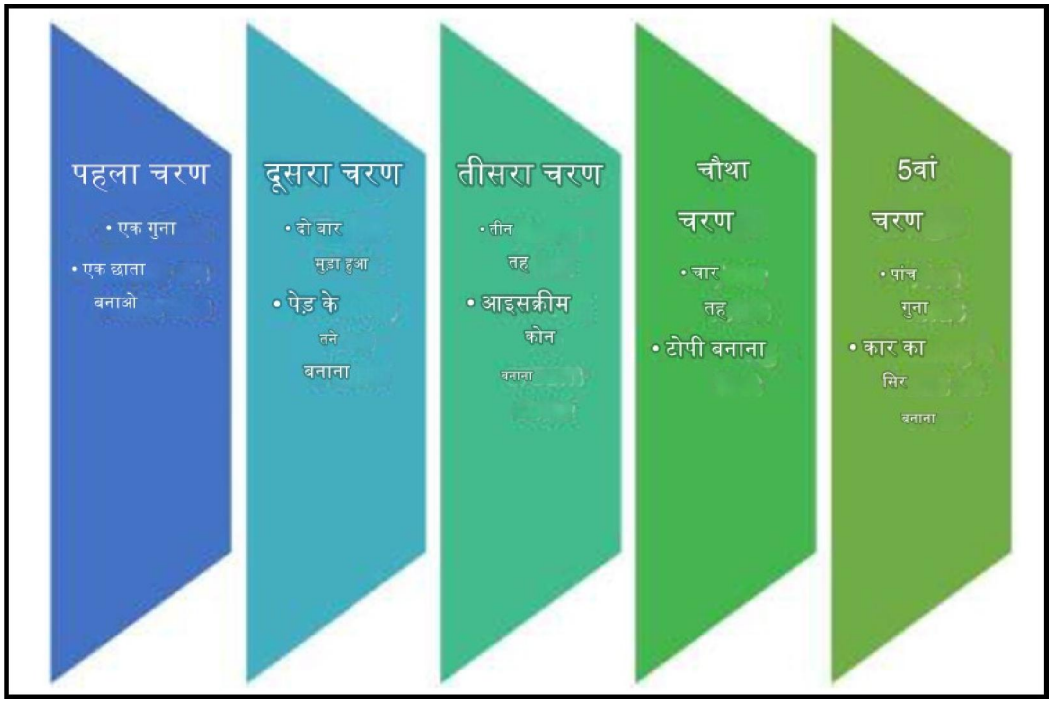

चित्र 4: तह गतिविधियों के पांच चरण

सहभागिता मॉडल के लिए समूह गतिविधियाँ प्रीस्कूलर के सामाजिक विकास के लिए एक अनिवार्य दृष्टिकोण हैं। सहयोग, धैर्य, विचारों का आदान-प्रदान, चीजों को साझा करना, नई चीजों की खोज, रचनात्मक अभिव्यक्ति, टीम वर्क, आदि कुछ ऐसे कौशल हैं जो बच्चों में समूह गतिविधियों के दौरान विकसित किए जाते हैं। इनडोर और आउटडोर खेल सहित छोटे समूह और बड़े समूह की गतिविधियाँ बच्चे को अलग-अलग

विचारों, प्रकृति, समझ वाले अन्य बच्चों के साथ बातचीत करने और इसलिए सामाजिक रूप से सक्रिय होने में मदद करती हैं। प्रीस्कूल पहला चरण है जहाँ बच्चा अपने घर के विशिष्ट वातावरण से बाहर निकलता है और समाज का सामना करता है। इसलिए, बच्चे को शुरुआती प्रशिक्षण उसके सामाजिक और संवादात्मक कौशल को विकसित करने में मदद करता है जो उसे समाज में रहने के लिए उचित शिष्टाचार के साथ जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में प्रशिक्षित करता है। इसके अलावा, समूह गतिविधि के प्रत्येक चरण में प्रत्येक बच्चे की निगरानी, पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन करते हुए समूह में विश्वास को पोषित करना प्रशिक्षु या प्रीस्कूल प्रशिक्षक की जिम्मेदारी बन जाती है। छोटे समूह की चर्चाएँ अधिमानतः संकेंद्रित वृत्तों में होनी चाहिए जिससे छात्रों के एक-दूसरे का सामना करने की संभावना हो और इसलिए बातचीत का बेहतर तरीका हो। आंतरिक और बाहरी सर्कल के छात्र आसानी से जोड़े में चर्चा कर सकते हैं और फिर अन्य समूहों के साथ प्रतिक्रिया और विचारों को साझा किया जा सकता है। इससे प्रीस्कूलर अपने विचारों को साझा करने और सहपाठियों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार विकसित करने में मदद करेंगे। कहानी सुनाने के कार्यक्रमों के माध्यम से छोटी-छोटी कविताएँ और समस्या-समाधान चर्चाएँ की जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, कहानी सुनाने के बाद, छात्रों से कहानी की नैतिकता, कहानी के पीछे की समस्या और उनमें नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने के लिए कई माँ के प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इसके अलावा, रंगीन गतिविधियाँ, रंग भरना, पेंटिंग, पेपर फोल्डिंग और अन्य ओरिगेमी गतिविधियाँ प्रीस्कूलर के बढ़िया मोटर कौशल को सुधारने में मदद करती हैं। विदायती एट अल ने प्रीस्कूलर की पेपर फोल्डिंग गतिविधियों के माध्यम से बढ़िया मोटर कौशल के साथ-साथ ज्यामिति, आकार और माप सीखने पर एक अध्ययन का प्रदर्शन किया है। उन्होंने प्रीस्कूलर को ओरिगेमी गतिविधियों का प्रदर्शन करने में शिक्षकों की भूमिका को समझाने के लिए चित्र 4 में दर्शाए गए फोल्डिंग के पाँच चरणों का उपयोग किया था। किंडरगार्टन में फोल्डिंग स्टेप्स सिखाने के लिए, शिक्षकों को फोल्डिंग स्टेप्स को अच्छी तरह से समझाना चाहिए, क्योंकि इसके लिए दृश्य स्थानिक क्षमताओं, हाथ के कौशल और उचित नेत्र समन्वय की आवश्यकता होती है। पेपर फोल्डिंग के विभिन्न लाभों में शामिल हैं; दोनों हाथों में सही मोटर कौशल का विकास, रचनात्मक शक्ति में सुधार, सीखने वालों की एकाग्रता, स्मृति कौशल और धैर्य में सुधार। शिक्षार्थियों द्वारा कागज मोड़ने की गतिविधियों का चरणबद्ध अभ्यास और शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन उनके सूक्ष्म मोटर कौशल के समुचित विकास में मदद करता है।

सुझाव:

1. पूर्वस्कूली शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए नियोजन सत्र शुरू करने की आवश्यकता है।

2. आवश्यकतानुसार पूर्वस्कूली शिक्षकों को संसाधन, सुविधाएँ और उचित सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

3. प्रारंभिक शिक्षा उच्च शिक्षा कार्यक्रम से अलग है। पूर्वस्कूली बच्चों में जिज्ञासा, उत्साह और चिंता होती है; इसलिए, भर्ती किए गए पूर्वस्कूली शिक्षकों को गुणात्मक रूप से अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

4. पूर्वस्कूली शिक्षकों को सहानुभूति विकसित करने, पूर्वस्कूली बच्चों के निर्देशों का पालन करने, टीम वर्क करने और स्थानीय भाषा में अच्छी विशेषज्ञता रखने में पूर्वस्कूली बच्चों का मार्गदर्शन करने और उन्हें संभालने में अच्छी तरह से प्रशिक्षित होना चाहिए।

5. ECCE फुल फॉर्म के अनुसार देखभाल की अवधारणा NEP 2020 में अदृश्य है और इसे और अधिक विस्तृत और ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि प्रारंभिक अवस्था में बच्चे की देखभाल उसके समग्र विकास और विकास के लिए पूर्व-आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

एनईपी 2020 शिक्षार्थियों को उनकी क्षमता, जुनून और फोकस के आधार पर उनके सीखने के कार्यक्रम और प्रक्षेपवक्र का चयन करने के लिए लचीलापन देता है। यह ज्ञान के इनपुट को एकीकृत करने के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों, विज्ञान और कला, शैक्षणिक और व्यावसायिक के बीच की बाधाओं को दूर करता है। बच्चों के उपयुक्त आयु समूहों में प्रारंभिक बचपन देखभाल कार्यक्रम पर इसका विशेष ध्यान इसे छात्रों के प्रसार के लिए एक व्यवहार्य उपकरण के रूप में साबित कर सकता है। प्रीस्कूलरों के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता कौशल का विकास वर्तमान महामारी परिदृश्य में आवश्यक प्रशिक्षण है और भविष्य में संभावित संक्रमण या बीमारियों को रोकता है। प्रीस्कूलरों के लिए बेहतर बुनियादी ढांचे का निर्माण और शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षित कर्मचारियों की भर्ती से प्रीस्कूलरों के लिए सामाजिक, संज्ञानात्मक, जीवन कौशल, समानता और समावेश, संवैधानिक, नैतिक मूल्यों और अन्य आवश्यक कौशल का उचित विकास हो सकेगा। सफल प्रीस्कूल शिक्षा कार्यक्रम परियोजना सुनिश्चित करने के लिए नवीन शिक्षण प्रदर्शन तकनीकों के साथ समय-समय पर प्रशिक्षण और प्रीस्कूलर के आयु समूहों के अनुसार चरण-दर-चरण मॉड्यूल का कार्यान्वयन आवश्यक है।

संदर्भ :

[1]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, भाग I: स्कूल शिक्षा, 7-10.https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/ NEP_Final_English_0.pdf

[2]. टियरनी, एल.ए., नेल्सन, ए.सी., III (2009)। मस्तिष्क विकास और प्रारंभिक वर्षों में अनुभव की भूमिका, जीरो थ्री, 30(2), 9–13।

[3]. अबंकिना, आई., फिलाटोवा, एल. (2017)। प्रीस्कूल शिक्षा की पहुँच 1-23, https://www.researchgate.net/publication/327909981_Accessibility_of_Pre-School_Education.

[4]. अर्ली, डी.एम., मैक्सवेल, के.एल., पाँडर, बी.बी., और पैन, वाई. (2017)। शिक्षक-बच्चे की अंतःक्रियाओं में सुधार: कक्षा में अंतःक्रियाओं का अधिकतम लाभ उठाने और मेरे शिक्षण साथी के व्यावसायिक विकास मॉडल का एक यादृच्छिक नियंत्रण परीक्षण। प्रारंभिक बचपन अनुसंधान त्रैमासिक, 38(1), 57-70।

[5]. अलसोबे, फहद, एम., (2015)। बचपन के शैक्षिक, सामाजिक और व्यवहारिक विकास पर प्री-के शिक्षा के दीर्घकालिक प्रभाव। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 6(16), 45-49।

[6]. मॉर्गन, एच., (2019)। क्या उच्च गुणवत्ता वाले प्रीस्कूल बच्चों को लाभ पहुँचाते हैं? शोध क्या दर्शाता है, शिक्षा विज्ञान। 9(1), 19-28।

[7]. एस्टेस, सी.डी. (2015)। प्रीस्कूल अनुभव बनाम प्रीस्कूल अनुभव नहीं: बच्चों की शैक्षणिक और सामाजिक तत्परता पर दीर्घकालिक प्रभाव, स्नातक मास्टर की थीसिस, कैपस्टोन और समापन परियोजनाएँ, 153(1), 1-49।

[8]. मल्लिक, एस. (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और आरटीई के साथ इसका तुलनात्मक विश्लेषण,

[9]. अमेरिकन रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज, 7(1), 1-7.

[10]. केपीएमजी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव और हितधारकों के लिए अवसर https://assets.kpmg/content/dam/kpmg/in/pdf/2020/08/impact-of-national-education-policy-2020- and-opportunities-for-stakeholders.pdf.

[11]. ऐथल, पी. एस., ऐथल, शुभ्रज्योत्सना (2019)। भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्ताव 2019 में उच्च शिक्षा का विश्लेषण और इसके कार्यान्वयन की चुनौतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट लेटर्स (आईजेएईएमएल), 3(2), 1-35.

[12]. ऐथल, पी.एस., ऐथल, शुभ्रज्योत्सना (2020)। भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, टेक्नोलॉजी, एंड सोशल साइंसेज (आईजेएमटीएस), 5(2), 19-41।

[13]. बेल्स्की, जे. (2001)। प्रारंभिक बाल देखभाल के साथ विकासात्मक जोखिम (अभी भी) जुड़े हुए हैं।

जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी एंड साइकियाट्री एंड अलाइड डिसिप्लिन, 42(7), 845–859।

[14]. तिलक, जे. बी. जी. (2019)। आशाजनक लेकिन हैरान करने वाले समाधान: मसौदा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 की आलोचना, 49(4), 686-712।

[15]. मारुथवनन, एम. (2020)। मदुरै जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच नई शिक्षा नीति (2019) के बारे में जागरूकता पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, 8(3), 67-71।

[16]. कल्याणी, पी. (2020)। भारतीय शिक्षा प्रणाली के भविष्य और हितधारकों पर इसके प्रभावों के विशेष संदर्भ के साथ एनईपी 2020 [राष्ट्रीय शिक्षा नीति] पर एक अनुभवजन्य अध्ययन। जर्नल ऑफ मैनेजमेंट इंजीनियरिंग एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (जेएमईआईटी), 7(5), 1-17।

[17]. पियांटा, आर.सी., बार्नेट, डब्ल्यू.एस., बर्चिनल, एम., थॉर्नबर्ग, के.आर. (2009)। प्रीस्कूल शिक्षा के प्रभाव: हम क्या जानते हैं, सार्वजनिक नीति साक्ष्य आधार के साथ कैसे संरेखित है या नहीं है, और हमें क्या जानना चाहिए, जनहित में मनोवैज्ञानिक विज्ञान, 10(2), 49-88।

[18]. देवी, एल., चेलुवराजू। (2020)। वाणिज्य और प्रबंधन अनुशासन के हितधारकों के बीच राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभाव के बारे में जागरूकता पर एक अध्ययन। यूरोपियन जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट रिसर्च, 5(6), 1-5।

[19]. झा, पी., पार्वती, पी. (2020)। बयानबाजी पर लंबा और सार पर छोटा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020। बैंकों में शासन, 55(34), 14-17।

[20]. सावंत, आर. जी., संकपाल, यू. बी. (2021)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा: एक संक्षिप्त समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आईजेसीआरटी), 9(1) 3456-3460.

[21]. कौरव, आर.पी.एस., सुरेश, के.जी., नरूला, एस. (2020)। नई शिक्षा नीति: गुणात्मक (सामग्री) विश्लेषण और ट्विटर माइनिंग (भावना विश्लेषण)। जर्नल ऑफ कंटेंट, कम्युनिटी एंड कम्युनिकेशन, 12(6), 4-13।

[22]. मन्हास, एस., कादिरी, एफ. (2010)। भारत में प्रारंभिक बचपन शिक्षा केंद्रों में प्रीस्कूल शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन। प्रारंभिक बचपन में समकालीन मुद्दे, 11(4), 443-447।

[23]. गौड़ा, एस., शेखर, वी.टी. (2014)। भारत में स्कूल छोड़ने वालों के लिए कारक: राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-3 के आंकड़ों का विश्लेषण। आईओएसआर जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन (आईओएसआर-जेआरएमई), 4(6), 75-83।

[24]. देसाई, एम.एस., जॉनसन, आर.ए. (2014)। एकीकृत प्रणाली-उन्मुख छात्र-केंद्रित शिक्षण वातावरण। कैंपस-वाइड सूचना प्रणाली, 31(1), 24-45।

[25]. कीली, डी. जे., प्रोथेरो, डी. आर., मैकडोनाल्ड, डी., वुलपे, टी. (2003)। योग्यता-आधारित प्रशिक्षण डिजाइन और मूल्यांकन प्रणाली की स्थापना। प्रदर्शन सुधार, 42(5), 28-33।

[26]. ऐथल, पी. एस., कुमार, एस. (2016)। अनुसंधान उत्पादकता और उच्च शैक्षणिक संस्थागत रैंकिंग का एबीसी मॉडल। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड मैनेजमेंट इंजीनियरिंग (आईजेईएमई), 6(6), 74-84।

[27]. चोपड़ा, एन. (2012)। दिल्ली, भारत में प्रारंभिक बचपन शिक्षा कार्यक्रमों का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्ली इयर्स एजुकेशन, 20(2), 159-174।

[28]. गिलियम, डब्ल्यू.एस., जिगलर, एफ.ई. (2000)। 1977 से 1998 तक राज्य द्वारा वित्तपोषित प्रीस्कूल के सभी मूल्यांकनों का एक महत्वपूर्ण मेटा-विश्लेषण: नीति, सेवा वितरण और कार्यक्रम मूल्यांकन के लिए निहितार्थ। अर्ली चाइल्डहुड रिसर्च क्वार्टरली, 15(4), 441-473।

[29]. गोरे, के.एम. (2001)। प्रारंभिक बचपन की शिक्षा: शैक्षिक अवसर के अल्पकालिक और दीर्घकालिक लाभों की एक मेटा-विश्लेषणात्मक पुष्टि। स्कूल साइकोलॉजी क्वार्टरली, 16(1), 9-30।

[30]. यिजेंगॉ, वाई.जे., टेसेगा, एम. (2020)। बहिर डार शहर प्रशासन में प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) का कार्यान्वयन: निजी और सार्वजनिक पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों के बीच एक तुलनात्मक अध्ययन। सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज ओपन, 2(1), 00013।

[31]. मैनुअल, एफ.एम., ग्रेगोरियो, बी.ई. (2011)। फिलीपींस में प्रारंभिक बचपन शासन के लिए कानूनी रूपरेखा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ चाइल्ड केयर एंड एजुकेशन पॉलिसी, 5(1), 65-76।

[32]. गांधी, आर. (2020)। भारत में प्रवासी मजदूरों पर कोविड-19 रोकथाम कार्यक्रम के दौरान लॉकडाउन का प्रभाव। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 9(4), 51-55.

[33]. गांधी, आर. (2020). चंडीगढ़ पर कोविड-19 का प्रभाव- इसके कारण, परिणाम और इसके संक्रमण को रोकने में समुदाय की भूमिका. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 6(4), 308-313.

[34]. मेलहुइश, ई., स्टीवंस, के.ई., पेट्रोगियानिस, के., एरीस्कु, ए., पेंडेरी, ई., रेंत्ज़ौ, के., टैवेल, ए., स्लॉट, पी., ब्रोकहुइज़न, एम., लेसेमैन, पी. (2015). बाल विकास पर प्रारंभिक बचपन शिक्षा और देखभाल (ईसीईसी) के प्रभावों पर शोध की समीक्षा. केयर परियोजना; यूरोपीय प्रारंभिक बचपन

शिक्षा और देखभाल (ईसीईसी) का पाठ्यक्रम गुणवत्ता विश्लेषण और प्रभाव समीक्षा 1- 118. http://ecec-care.org/resources/publications/ पर उपलब्ध है

[35]. सैनी, एम., सिंह, एम., कौर, एम., कौर, एम. (2021)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुमोदन पर भारतीय नागरिकों की व्यवहारिक प्रतिक्रिया की जांच करने के लिए ट्वीट्स का विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 82(1), 102356।

[36]. सईद, जेड., फ्राइसन, एच., अल-एज़ाह, एच. (2014)। स्कूल विज्ञान में व्यावहारिक गतिविधियों का महत्व: कतरी स्कूलों में स्वतंत्र स्कूल शिक्षकों के दृष्टिकोण, EDULEARN14 सम्मेलन की कार्यवाही 7-9 जुलाई 2014, बार्सिलोना, स्पेन, आईएसबीएन: 978-84-617-0557-3, 4847-4856।

[37]. मुदजीलवाना, पी.एन. (2014)। प्रीस्कूल बच्चों को पढ़ाने में शिक्षण के माध्यम के रूप में दूसरी भाषा के प्रभावों का आकलन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइंसेज, 7(1), 87-98।

[38]. सराचो, एन.ओ. (2017)। साक्षरता और भाषा: शोध, सिद्धांत और व्यवहार में नए विकास। प्रारंभिक बाल विकास और देखभाल, 187(3-4), 299-304।

[39]. निशांति, आर. (2020)। मातृभाषा सीखने के महत्व को समझना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट (आईजेटीएसआरडी), 5(1), 77-80।

[40]. बछोर, एम.एम. (2014)। मातृभाषा आधारित कक्षा शिक्षण में शिक्षार्थियों की सफलता और स्कूल समुदायों के दृष्टिकोण और धारणाएँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन, 3(2), 118-135।

[41]. अवोपेटु, वी.ए. (2016)। प्रारंभिक बचपन की कक्षा में बच्चों की सीखने की क्षमताओं पर मातृभाषा का प्रभाव। प्रोसीडिया - सामाजिक और व्यवहार विज्ञान, 233(1), 58 – 63.

[42]. विक, जे., मोस्टर्ट, एल.एम., हुई, एफ.के.एस. (2016)। अंग्रेजी सीखने पर मातृभाषा और लिंग का प्रभाव (एल2)। विंडहोक स्कूलों, नामीबिया में अफ्रीकी भाषा का मामला। कॉजेंट एजुकेशन, 3(1), 1-12, 1210997।

[43]. विवास, ए., गेले, बी., अबोसेट, एन., कुमी, ए., बरहेन, वाई., विलियम्स, ए.एम. (2010)। अंगोलेला, इथियोपिया में स्कूली बच्चों में स्वच्छता के बारे में ज्ञान, दृष्टिकोण और अभ्यास (केएपी)। जे. प्रीव मेड हाइग., 51(2), 73–79।

[44]. लियोनी, पी., रेनाटे, जी., क्रिस्टीन, डब्ल्यू.वी. (2004)। जीवन कौशल-आधारित स्वच्छता शिक्षा: स्कूल स्वच्छता और स्वच्छता शिक्षा कार्यक्रमों में जीवन कौशल-आधारित स्वच्छता शिक्षा के साथ

अवधारणाओं, विकास और अनुभवों पर एक मार्गदर्शन दस्तावेज़। डेल्फ़्ट, नीदरलैंड, आईआरसी अंतर्राष्ट्रीय जल और स्वच्छता केंद्र, तकनीकी पेपर श्रृंखला; संख्या 42, 144. https://www.ircwash.org/sites/default/files/Postma-2004-Lifeskills.pdf.

[45]. मौसेना, ई., और सिदिरोपोलू, टी. (2018)। मौखिक संचार कौशल और शिक्षाशास्त्र। 21वीं सदी में नई शैक्षणिक चुनौतियाँ, 231-247। इंटेकओपन प्रकाशन।

[46]. अलबश्तावी, एम. (2015)। जॉर्डन में 6-12 वर्ष की आयु के स्कूली बच्चों में व्यक्तिगत स्वच्छता। ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ स्कूल नर्सिंग, 10(8), 395-398।

[47]. लाल, एस.बी., कविता, जी. (2016)। व्यक्तिगत स्वच्छता ज्ञान और प्रथाओं का आकलन: वारंगल में स्कूली बच्चों का एक अनुभवजन्य अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च (आईजेएसआर), 5(8), 1521-1524।

[48]. ओबेंग, एस.सी. (2008)। प्रीस्कूल कक्षाओं में व्यक्तिगत स्वच्छता गतिविधियाँ। अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशनल जर्नल, 36(1), 93-99।

[49]. केरिच, सी.जे., सांग, एच., किपकोसगेई, ए. (2017)। लोंडियानी उप-काउंटी में प्रारंभिक बचपन शिक्षा केंद्रों में स्वच्छता प्रथाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण विधियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशन्स, 7(10), 165-171।

[50]. हर्सिस्मैंटो, जे., फ्रेड्रिका, एल., वाटी, एन., पैडीला, सूर्यानी, डी., यंड्रीज़ा (2021)। प्री स्कूल बच्चों के फाइन मोटर डेवलपमेंट में सुधार पर ओरिगेमी हस्तक्षेप की प्रभावशीलता। इंडियन जर्नल ऑफ़ फ़ोरेंसिक मेडिसिन एंड टॉक्सिकोलॉजी, 15(1), 1107-1112।

[51]. विदायती, एस., सिमातुपांग, डी.एन., सारी, पी.पी. (2020)। फोल्डिंग पेपर चरणों के जोड़ का बच्चों के बढ़िया मोटर कौशल पर प्रभाव। सामाजिक विज्ञान, शिक्षा और मानविकी अनुसंधान में प्रगति, 387(1), 62-65।

[52]. हर्पिटा, एस. (2016)। सेंट एंटोनियस-2 में 5-6 साल की उम्र में बाल चिकित्सा उच्च शिक्षा के लिए उन्नत मोटर कौशल का विकास। हंडयानी जर्नल। 6(1), 99-108।

[53]. ऐथल, पी.एस., और ऐथल, शुभ्रज्योत्सना (2020)। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में उच्च शिक्षा के कार्यान्वयन की रणनीतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, टेक्नोलॉजी, एंड सोशल साइंसेज (आईजेएमटीएस), 5(2), 283-325।